1.

मनोविज्ञान (Psychology): एक परिचय

- ''मनोविज्ञान'' को अग्रेंजी भाषा में Psychology कहते है।
- Psychology शब्द ग्रीक/युनानी भाषा के दो शब्द

Psyche(साइकी – ''आत्मा'')

Logo(विज्ञान/अध्ययन/विवेचन)

इस प्रकार मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ **''आत्मा के संबंध में अध्ययन करने वाला''** विषय है।

- मनोविज्ञान के लिए ''साइकोलॉजी'' (Psychology) शब्द का **सर्वप्रथम प्रयोग ग्रीक मनोविज्ञानी ''रूडोल्फ गोइकिल''** ने सन् **1590** में **मनोविज्ञान की पहली पुस्तक ''साइकोलोजिया''** में किया।

मनोविज्ञान का विकास क्रम/अवस्थाऐं (Developing Stages of Psychology)

- रेबर्न(Reyburn) –''आधुनिक काल में एक परिवर्तन हुआ है। मनोवैज्ञानिकों ने धीरे–धीरे अपने विज्ञान को दर्शनशास्त्र से पृथक कर लिया है।''

मनोविज्ञान का विकास क्रम

विकास क्रम	आत्मा का विज्ञान (Science Of Soul)	मस्तिष्क/मन का विज्ञान (Science Of Mind)	चेतना का विज्ञान (Science Of Consciousness)	व्यवहार का विज्ञान (Science Of Behaviour)
	16 वीं सदी तक	17–18 वीं सदी तक	19 वीं सदी	20वीं सदी से वर्तमान तक
समर्थक	प्लेटों, अरस्तु, डेकार्टे, अरिस्टोटल	पाम्पोंलॉजी, थॉमस रीड, लिबिनिज, हॉब्स, लॉक, कांट, ह्यूम	विलियम वुन्ट, विलियम जेम्स, वाइव्स और जेम्स सल्ली आदि	वाटसन, मैक्डूगल, स्किनर, थार्नडाइक, वुडवर्थ, क्रो एण्ड क्रो, मन इत्यादि
ट्रिक	TRICK–आत्मा से आप यू अडें आ–अरस्तू (दार्शनिक) प–प्लेटो (दार्शनिक) यू–यूनानी दार्शनिक अ–अरिस्टोटल(दार्शनिक) डे–डेकार्टे (दार्शनिक)	TRICK–पलक की बाई मस्ति में प–पॉम्पोनॉजी (दार्शनिक) लक–लॉक (दार्शनिक) की–silent बा–बर्कली (दार्शनिक) इटली–यह इटली के प्रसिद्ध दार्शनिक थे मस्ति–इन सभी दार्शनिको ने मनोविज्ञान को मस्तिष्क का विज्ञान माना	TRICK–चेतना को विलियम ने सजवाइ चेतना–इन सभी दार्शनिको ने मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान माना को–silent विलियम–विलियम वुन्ट ने–silent स–सल्ली अर्थात जेम्स सल्ली (दार्शनिक) ज–जेम्स अर्थात विलियम जेम्स (दार्शनिक) वाइ–वाइव्स (दार्शनिक) विधि : अंतदर्शन	TRICK–सिवम (शिवम) व्यवहार में वुड (लकड़ी/wood सा कठौर) के जैसा सि–स्किनर (दार्शनिक) व–वाटसन (दार्शनिक) म–मन (दार्शनिक) व्यवहार–इन सभी ने मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना में–मैक्डूगल (दार्शनिक) वुड–वुडवर्थ (दार्शनिक) के–क्रो व क्रो (दार्शनिक) जैसा–silent

मत का खण्डन	रॉस –आत्मा का न तो कोई स्वरूप है न ही कोई आकार है।	मन एक ऐसी अमूर्त वस्तु है, जिसे देखा या सुना नही जा सकता।	सिगमण्ड फ्रायड के अनुसार चेतन मस्तिष्क, अर्द्धचेतन, और अचेतन मस्तिष्क होते है। जिसमें चेतन मस्तिष्क तो केवल मात्र 1/10 वां भाग ही होता है।	

मनोविज्ञान का जनक :–''अरस्तु''

- पश्चिम में मनोविज्ञान को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का श्रैय अरस्तु को जाता है, उसका ग्रंथ ''**डी एनिमा**'' **(DE ANIMA)** मनोविज्ञान का ही ग्रंथ है।
- प्लेटों मस्तिष्क को ज्ञान का केन्द्र स्वीकार करता था, वहीं अरस्तु हृदय को ज्ञान का केन्द्र मानता था। अरस्तु के अनुसार ज्ञान का उद्गम स्थान हृदय है यानी ''ज्ञान आत्मा का गुण'' इसके आलावा अरस्तु का मनोविज्ञान आत्मा की अलग–अलग शक्तियों का अध्ययन करता है, इसी आधार पर ***केलर के अनुसार*** '' अरस्तु को मनोविज्ञान का पिता कहा गया।
- **अरस्तु के समय मनोविज्ञान :–**
  1. मनोविज्ञान का अध्ययन दर्शनशास्त्र में किया जाता था।
  2. मनोविज्ञान अन्य विषय –Physics,Biology and Zoology से नही जुडा था।
  3. मनोविज्ञान के अध्ययन की विधि '' अंतःदृष्टि'' थी।
  4. इस काल में आत्मा के भिन्न–भिन्न शक्तियों को स्वीकार किया जाता था, इसलिए इस काल का मनोविज्ञान ''Faculty Psychology'' थां।
  5. अरस्तु के काल में **आत्मा एवं शरीर(देकार्त ने)** में अंतर होने के कारण, मनोविज्ञान को आत्मा का अध्ययन कहा गया, इसलिए मनोविज्ञान को ''बौद्धिक सम्प्रदाय''/Rational School कहा गया।

आधुनिक मनोविज्ञान का जनक :–''विलियम जेम्स''

- 1890 में विलियम जेम्स ने ''मनोविज्ञान के सिद्धांत'' (Principal of Psychology) में मनोविज्ञान को ''चेतना की अवस्था का अपने उसी रूप में वर्णन और व्याख्या करने वाले विषय के रूप में परिभाषित किया।
- **सरंचनावादी (Structuralists)** :–मनोविज्ञान की विषय वस्तु मन/आत्मा से हटकर मानसिक क्रियाऐं(Mental Activities) या चेतन अनुभूति (Conscious Experience) हो तो इसे **संरचनावादी** कहा गया।
  सरंचनावादी के प्रमुख :– विलियम वुण्ट और एडवार्ड ब्रेडफोर्ड टिचनर
  विश्व की पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की :– विलियम वुंट एवं टिचनर (1879, लिपजिंग विश्वविद्यालय(जर्मनी), वर्तमान में :– कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय)

हर्बार्ट(Herbart) :– जर्मन मनौवैज्ञानिक एवं शिक्षाशास्त्री जोहान फ्रेडरिक हर्बार्ट

- **ह्यूम** एक ओर आत्मा में विभिन्न शक्तियों संबंधी विचार का खण्डन कर रहा था, वही दूसरी ओर वह ज्ञान, संवेदन और कृति के रूप में आत्मा की विभिन्न शक्तियों के स्थान पर तीन शक्तियों का निरूपण कर रहा था।

SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

- **हर्बार्ट** ने मानसिक क्रिया को तीन भागों में विभाजित करना उचित नही समझा तथा बताया कि ज्ञान, संवेदन और कृति भिन्न–2 मानसिक शक्तियां नही है। ज्ञान में संवेदन तथा कृति रहती है, संवेदन में ज्ञान तथा कृति और कृति में ज्ञान तथा संवेदन निहित रहते है।

  हर्बार्ट के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार यह स्वीकार किया जाने लगा कि बालक का मन एक इकाई है, उसका मनोवैज्ञानिक ढंग से विकास करना ही शिक्षक का कार्य है।

- **विलियम मैकडूगल :–**
- 1905 में मनोविज्ञान की परिभाषा ''सजीव प्राणियों के आचरण के सकारात्मक विज्ञान'' के रूप में समझने के द्वारा दी जा सकती है।''
- पुस्तक :– Introduction of Social Psychology(1908)
  (सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय)
  An Outline Of Psychology
  (मनोविज्ञान की रूपरेखा)
- **जे.बी. वाटसन :–** 1913 में व्यवहारवादी विचारधारा के जनक ''जे.बी. वाटसन'' ने ''व्यवहार'' शब्द को अधिक विस्तृत बनाने का प्रस्ताव रखा और परिणामस्वरूप मनोविज्ञान विषय के अध्ययन में मानव मात्र के व्यवहार का अध्ययन ही शामिल न होकर संपूर्ण प्राणियों के व्यवहार के अध्ययन को शामिल किया जाने लगा।

मनोविज्ञान की परिभाषाऐं :–

वाटसन	'' मनोविज्ञान **व्यवहार का निश्चित एवं शुद्ध विज्ञान** है।''
मैकडूगल	1. ''मनोविज्ञान **आचरण एवं व्यवहार** का यथार्थ विज्ञान है।'' 2. मनोविज्ञान एक विज्ञान है जिसका उद्देश्य सभी प्रकार से किसी प्राणी के व्यवहार का नियंत्रण करने और उसे अच्छी तरह से समझने में सहायता प्रदान करता है।
स्किनर	''मनोविज्ञान **व्यवहार और अनुभव** का विज्ञान है।''
कॉलसनिक	''मनोविज्ञान **मानव व्यवहार का अध्ययन** है।''
पिल्सवरी	''मनोविज्ञान **मानव व्यवहार का अध्ययन** है।
वुडवर्थ	1. ''मनोविज्ञान **वातावरण (पर्यावरण) के संबंध में व्यक्ति की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन** है।'' 2. ''मनोविज्ञान ने सबसे पहले अपनी आत्मा को त्यागा, फिर अपने मन को त्यागा, फिर चेतना को त्यागा और वर्तमान में यह व्यवहार के ढंग को अपनाता है।''
क्रो एण्ड क्रो	''मनोविज्ञान **मानव व्यवहार और मानव संबंधों** का अध्ययन है।''
मन	''आधुनिक मनोविज्ञान का संबंध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज है।''
विलियम	''मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा चेतना के वर्णन और व्याख्या के रूप में की जा

SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

जेम्स	सकती है।''
मॉर्गन	''मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का विज्ञान है।''

मनोविज्ञान की विशेषताऐं :–

1. मनोविज्ञान **शारीरिक व सामाजिक व्यवहारों** का अध्ययन करता है।
2. मनोविज्ञान **वातावरण में समंवयन** का अध्ययन है।
3. मनोविज्ञान मनुष्य में **चेतन व अचेतन व्यवहार** का अध्ययन है।
4. **मनुष्य तथा जंतुओं में व्यवहार** का विज्ञान है।
5. **जीवों तथा वातावरण में होने वाली अंतःक्रिया का** विज्ञान है।
6. मनोविज्ञान **निश्चयात्मक विज्ञान** नही बल्कि यह वस्तुपरक विज्ञान है।
7. मनोविज्ञान मनुष्य के **मनो सामाजिक व्यवहार** का अध्ययन है।

मनोविज्ञान की प्रकृति :–

प्रकृति के आधार पर विज्ञान दो प्रकार का होता है :–

विधायक विज्ञान (Fact Science)	नियामक विज्ञान(Concept Science)
1. विधायक विज्ञान **तथ्यों का अध्ययन** करता है।	1. नियामक विज्ञान **मूल्यों का अध्ययन** करता है।
2. विधायक विज्ञान के निर्णय **तथ्यात्मक होते है।**	2. नियामक विज्ञान के निर्णय **मूल्यात्मक** होते है।
3. यह ''क्या है?'' पर बल देता है।	3. यह ''क्या होना चाहिए'' पर बल देता है।
4. क्रमबद्ध अध्ययन पर बल देता है।	4. व्यवहार के शुद्धिकरण पर बल देता है।

मनोविज्ञान की प्रकृति –विधायक विज्ञान

SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
(Schools Of Psychology)

मनोविज्ञान के किसी सम्प्रदाय से तात्पर्य मनोवैज्ञानिकों के किसी ऐसे समह से है जो मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए एक समान विचारधारा तथा विधियों का अनुसरण करते है।

19 वीं शताब्दी के अंत में तथा 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में मनोवैज्ञानिकों में मनोविज्ञान के दृष्टिकोण, विषय वस्तु तथा विधियों के संबंध में मतभेद हो गए एवं इस

कारण कई मनोवैज्ञानिक अनेक समूहों में विभक्त होकर अपनी–अपनी विचारधारा एवं चिंतन प्रणाली के साथ मनोविज्ञान के अध्ययन में लग गए।

मनोविज्ञान के प्रमुख सम्प्रदाय निम्नलिखित है :–

1. **संरचनावाद (Structuralism):–** ***सरंचनावाद के प्रमुख प्रवर्तक –विलियम वुण्ट***
   अन्य प्रवर्तक –टिचनर, एडवर्ड, वेडफोर्ड

   विलियम वुण्ट ने मन का व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए 1879 में लिपजिंग में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला स्थापित कर मनोविज्ञान को स्वतंत्र विज्ञान का दर्जा दिया।

   विलियम वुण्ट तथा टिचनर ने **अंतःदर्शन विधि** का प्रयोग करके प्रयोगशालाओं में मनोवैज्ञानिक अध्ययन किए।

   इनके अनुसार ''जटिल मानसिक अनुभव वास्तव में सरंचनाऐं है जो अनेक मानसिक स्थितियों से मिलकर बनी होती है।''

संरचनावादियों ने :–

1. मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग करके एक स्वतंत्र विषय होने का गौरव प्रदान किया।
2. व्यवहार के अध्ययन की **अंतदर्शन विधि** उपलब्ध कराई
3. व्यवस्थित ढंग से मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला का गठन किया।

   लेकिन प्रक्रिया के स्थान पर संरचना पर ध्यान देना संरचनावाद की सबसे बडी कमी थी।

   अंतदर्शन विधि में **वस्तुनिष्ठता, विश्वसनीयता तथा वैद्यता की कमी के कारण** सरंचनावादियों के निष्कर्षों की प्रमाणिकता सिद्ध नही हो पाती।

2. **प्रकार्यवाद(Functionalism):–** ***प्रकार्यवाद के प्रमुख प्रवर्तक –विलियम जेम्स***
   अन्य प्रवर्तक :– जान डीवी

विलियम जेम्स डार्विन के विकासवाद सिद्धांत (Theory of Evaluation) से प्रभावित था।

इन्होनें मन के अध्ययन में जीव विज्ञान की प्रवृति को अपनाया तथा बताया कि अनुभवों को तत्वों के रूप में विभाजित नही किया जा सकता है। इनके अनुसार मन की संरचना को जानना इतना जरूरी नही है जितना कि मन के कार्यों को जानना आवश्यक है।

SUCCESS COACHING INSTITUTE SRIGANGANAGAR

प्रकार्यवादियों ने अपने अध्ययनों के द्वारा यह जानने का प्रयास किया कि व्यक्ति वातावरण के साथ समायोजन करने में मानसिक अनुभव का किस प्रकार प्रयोग करता है।
वस्तुतः प्रकार्यवादियों का प्रमुख बल अधिगम प्रक्रिया तक केन्द्रित था।

3. **व्यवहारवाद(Behaviourism)** :– जे0बी0 वाटसन

   व्यवहारवादियों ने वृद्धि और विकास की प्रक्रिया में वंशानुक्रम की भूमिका को पूर्णरूपेण नकारते हुए केवल वातावरण के महत्व को स्वीकार किया। यानी व्यवहारवादियों ने केवल महसूस करने योग्य(Observable) तथा मापने योग्य य(Measurable) व्यवहार पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

   व्यवहारवादियो ंने **अधिगम, अभिप्रेरणा और पुर्नबलन** पर अधिक जोर दिया है।

4. **समग्रवाद (Gestaltism)**:– 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में जर्मनी में मनोविज्ञान के समग्रवाद नामक सम्प्रदाय का उदभव हुआ।

   Gestalt जर्मन शब्द है जिसका अर्थ :– **संपूर्णता या व्यवस्थित समग्र है।**

- गेस्टलवादी प्रतिपादक :– मैक्स वर्दीमर, कोहलर, कुर्त कोफका, कुर्त लेविन।
- गेस्टलवादियों के अनुसार : अवयवों की तुलना में संपूर्ण अनुभव अधिक महत्वपूर्ण होता है।

  इन्होने सीखने की प्रक्रिया में अंतदृष्टि(Insight) की भूमिका पर बल डाला है।

  - गेस्टलवादी किसी भी वस्तु या परिस्थिति को समग्र रूप में (As a Whole) देखते है न कि इसमें सम्मिलित तत्वों के समूह के रूप में। यही कारण है कि किसी भी समस्या/परिस्थिति के समाधान के समय अंतदृर्ष्टि की प्रमुख भुमिका होती है।
  - इनके अनुसार परिस्थिति को समग्र रूप से देखते हुए उसके विभिन्न अंगों के बीच के अनोखे संबंधों (Relations) एवं अंतक्रियाओं(Interations) को पहचानना ही अंतदृर्ष्टि है।
  - गेस्टलवादी सीखने के उद्देश्यों तथा अभिप्रेरणा पर जोर देते ळें

5. **मनोविश्लेषण (Psycho Analysis)**:– 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में वियनीज चिकित्सक **सिगफण्ड फ्रायड** इसके जनक थे। इन्होनें अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं (Unconscious Mental Process) पर जोर देते हुए कहा कि द्वंद्वों (Conflicts) तथा मानसिक व्यतिक्रम (Mental Disorder)के अधिकांश मुख्य कारण अचेतन में छिपे रहते है।

   अचेतन के अध्ययन के लिए फ्रायड ने मनोविश्लेषण की एक नई प्राविधि का आविष्कार किया जो मुख्यतः **मुक्त साहचर्य वाले विचार प्रवाह** (Freely Association Stream of thoughts) तथा स्वप्न विश्लेषण (Dream analysis) पर आधारित है। काफी लम्बे समय तक मनोविश्लेषणवाद का बोलबाला, रहा एवं इस दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्ययन किये गये । अल्फ्रेड एडलर तथा कार्ल जुंग ने कुछ संशोधनों के साथ परम्परागत मनोविश्लेषणवाद के विचारों को आगे बढ़ाने में विशेष योगदान किया। मनोचिकित्सा से अधिक सम्बन्धित होने के कारण मनोविश्लेषणवाद ने शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष योग्दान नहीं दिया। मनोविश्लेषणवाद बच्चों के विकास की अवस्थाओं को समझने में महत्वपूर्ण ज्ञान प्रस्तुत करता है।

6. **मानवतावादी (Humanistic) :-**

   मानवतावादी मनोविज्ञान के अध्ययन पर मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाने पर जोर देता है। **मानवतावादी विचारधारा में मानव को यन्त्रवत नहीं माना जाता हैं वरन उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने वाले तथा वातावरण के साथ अनुकूलन करने में समर्थ जीवधारी के रूप में स्वीकार किया जाता है।** इस विचारधारा में व्यक्तित्व के महत्व को स्वीकार करते हुए *स्वतंन्त्र इच्छा, वैयक्तिक विभिन्नता एवं व्यक्तिगत मूल्यों के अस्तित्व पर जोर दिया* जाता है।

   अब्राहम मैस्लों, कार्ल रोजर्स तथा आलापोर्ट प्रमुख मानवतावादी मनोवैज्ञानिक है।

7. **संज्ञानवाद (Cognitive) :-**

मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक दृष्टिकोण (Cognitive view) वातावरण के साथ अनुकूलन में संज्ञानात्मक योग्यताओं तथा प्रक्रियाओं के अध्ययन पर जोर देता है। एडवर्ड टालमैन (Edward Tolman) तथा जीन प्याजे (Jean Piaget) जैसे संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों के द्वारा इस दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया गया है।

वर्तमान समय में मनोविज्ञान के अध्ययन में मानवतावादी दृष्टिकोण (Humanistic View) तथा संज्ञानात्मक दृष्टिकोण (Cognitive view) पर अधिक जोर दिया जाता है।

8. **हारमिक (Hormic)**:– हारमिक मनोविज्ञान की स्थापना पर **विलियम मैक्डूगल** द्वारा की गई है। इन्होंने मनोविज्ञान को जीवित जीव–जंतुओं के बर्ताव का धनात्मक विज्ञान कहा है। **(Psychology is the positive Science of conduct)**

मैक्डूगल के द्वारा Conduct का प्रयोग व्यवहार के लिए किया गया है। मैक्डूगल ने उद्देश्यपूर्ण व्यवहार के अध्ययन पर बल डाला है। इनके अनुसार उद्देश्यपूर्ण व्यवहार का शक्ति बल (Energy Force) मूल प्रवृति (Instinct) होती है।

मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र

मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र में रात दिन वृद्धि होती जा रही है। अतः मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए अनेक शाखाओं को विभाजित कर दिया गया है। यही नहीं लगातार नए– नए क्षेत्र भी बनते चले जा रहे हैं। प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैं–

1. **सामान्य मनोविज्ञान (General Psychology)** :– सामान्य व्यक्तियों का सामान्य व्यव्हार
2. **असमान्य मनोविज्ञान(Abnormal Psychology)**:– असाधारण/असामान्य व्यक्ति के मनोविकार एवं परिस्थितियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन व चिकित्सा
3. **नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)**:– उपचारात्मक मनोविज्ञान
4. **शारीरिक मनोविज्ञान(Physiological Psychology)**:–व्यवहार का शारीरिक संरचना तथा कार्य प्रणाली से संबंध
5. **सामाजिक मनोविज्ञान (Social Psychology)**:–व्यक्ति के व्यवहार का उसके सामाजिक परिवेश के संदर्भ में समूह/सामाजिक दायरे के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है।
6. **औद्योगिक मनोविज्ञान** (Industrial Psychology):–मानव व्यवहार का औद्योगिक परिस्थितियों में किया जाने वाला अध्ययन। आपसी संबंधों को ध्यान में रखकर औद्योगिक क्षमता बढाना इसका उद्देश्य होता है।
7. **अपराध मनोविज्ञान** (Crime Psychology):– व्यक्तियों की मनोदशा और व्यवहार का अध्ययन कर अपराधी का पता लगाना और अपराधी के अपराध करने के मूल में उपस्थित कारणों का पता लगाकर उसके आचरण में सुधार लाने का प्रयत्न करना।
8. **प्रयोगात्मक मनोविज्ञान** (Experimental Psychology):– इसमें प्रयोगों के द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति की मनोदशा और व्यवहार का अध्ययन करके

मनोवैज्ञानिक नियम एवं निष्कर्ष निकाले जाते है अथवा मनोवैज्ञानिक सैद्धांतिक पक्ष की पुष्टि की जाती है।

9. **बाल मनोविज्ञान** (Child Psychology):– इसमें बाल्यावस्था में होने वाले क्रमिक विकास, व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं और मनोदशा का अध्ययन किया जाता है।
10. **किशोर मनोविज्ञान** (Adolescent Psychology):– इसमें किशोरावस्था में होने वाले विकास, व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं और मनोदशाओं का अध्ययन किया जाता है।
11. **प्रौढ मनोविज्ञान** (Adult Psychology):– प्रौढों का व्यवहार संबंधी समस्याओं, उनमें विकास एवं वृद्धि संबंधी विशेषताओं आदि
12. **शिक्षा मनोविज्ञान** (Education Psychology):– शिक्षार्थियों के व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों तथा वातावरण में अध्ययन किया जाता है।
13. **परामनोविज्ञान** (Trans/Para Psychology) :– बहूत दूर रहने वाले किसी सदस्य पर कोई आपति आने पर पता लग जाना या किसी घटना का पूर्वानुमान होना, पूर्व जन्म के अनुभव याद रहना
14. **विकासात्मक मनोविज्ञान** (Development Psychology):– गर्भाधान की क्रिया से प्रांरभ कर , बालक के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक होने वाली समस्त वृद्धि और विकास का क्रमबद्ध अध्ययन
15. **पशु मनोविज्ञान** (Animal Psychology):– पशुओं के व्यवहार का अध्ययन नियंत्रित परिस्थितिओं में करना
16. **संज्ञानात्मक मनोविज्ञान**(Cognititve Psychology):– इसमें मानव व्यवहार में मस्तिष्क की विकसित शक्तिओं, अनुभव, विवेक तथा अंतःदृष्टि का उपभोग होता है तथा इन्ही के आधार पर निर्णय क्षमता तथा समस्या समाधान योग्यता संबंधी संज्ञानात्मक व्यवहार के दर्शन मानव व्यवहार में देखने को मिलते है।
17. **सैन्य मनोविज्ञान** (Military Psychology):–सैन्य जगत की गतिविधियों में मनोविज्ञान के नियमों एवं सिद्धातों का उपयोग
18. **कानून मनेाविज्ञान** (Legal Psychology):–अपराधी, मुवक्किल, गवाह आदि के व्यवहार का अध्ययन
19. **राजनीतिक मनोविज्ञान** (Political Psychology):–
20. **स्वास्थ्य मनोविज्ञान** (Health Psychology):–शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का संरक्षण करने, अस्वस्थता तथा बीमारियों से अपना बचाव करने तथा सभी प्रकार से निरोग तथा सबल बने रहने में किया जाता है।
21. **पर्यावरण मनोविज्ञान** (Environment Psychology):–पर्यावरण संबंधी कारकों की क्या भूमिका रहती है, इन कारकों पर उचित नियंत्रण स्थापित करके वैयक्तिक तथा सामूहिक व्यवहार को उपयुक्त बनाने में किस प्रकार सफलता प्राप्त की जा सकती है।
22. **सामुदायिक मनोविज्ञान**(Community Psychology):– एक समुदाय में रहने वाले लोगों के व्यवहार को समझना
23. **सुधारात्मक मनोविज्ञान** (Correctional Psychology):– जिनका व्यवहार असामान्य, असामाजिक एवं अनैतिक आचरणों में लिप्त है उनको सुधारने में

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

24. **व्योम–अंतरिक्ष मनोविज्ञान**(Aerospace Psychology):–जैसे–2 हम धरती से उपर उठकर अंतरिक्ष एवं आकाश की ओर जाते है तो मानव के व्यवहार एवं व्यक्तित्व में जो परिवर्तन आते है।
25. **उपभोक्ता मनोविज्ञान**(Consumer Psychology):–उपभोक्ता के व्यवहार का अध्ययन
26. **वैयक्तिक मनोविज्ञान** (Individual Psychology):–व्यक्तियों में व्यक्तिगत भेद, वंशानुक्रम तथा वातावरण के कारण
27. **मनोमिति**(Psychometrics):– मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें मन, मस्तिष्क तथा व्यवहार के विभिन्न पहलुओं के वस्तुनिष्ठ मापन से संबंधित परीक्षणों तथा तकनीकों के निर्माण एवं उपयोग की बात की जाती है।
28. **संगठनात्मक या प्रबंधात्मक मनोविज्ञान**(Organistional or Managerial Psychology):– संगठन और प्रबंध कुशलता में प्रवीणता लाने की दृष्ठि से आज मनोविज्ञान की इस शाखा का भी प्रचलन बढ गया है।

मनोविज्ञान की उपयोगिता (**Applications of Psychology**) :–

1. शिक्षा के क्षैत्र में
2. निर्देशन एवं परामर्श के क्षैत्र में
3. चिकित्सा क्षैत्र में
4. व्यापार व उद्योग क्षैत्र में
5. कानून एवं अपराध क्षैत्र में
6. राजनीति के क्षैत्र में
7. सैन्य विज्ञान के क्षैत्र में
8. समायोजन और मानसिक स्वास्थ्य हेतु
9. सद्भावना एवं विश्व शांति हेतु
10. आत्मविकास हेतु

मनोविज्ञान के प्रमुख लक्ष्य (Major Goals of Psychology):– मनोविज्ञान के तीन प्रमुख लक्ष्य है :–

1. **वर्णन तथा मापन (Description and Meausrement)**:–मनोविज्ञान का प्रथम लक्ष्य प्राणी के व्यवहार एवं संज्ञानात्मक प्रक्रिया का वर्णन एवं मापन करना है। किसी भी व्यवहार एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का अध्ययन तभी संभव है, जब मनोवैज्ञानिक उसका वर्णन करने एवं वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध ढंग से मापन करने में समर्थ होता है।
2. **पूर्वानुमान तथा नियंत्रण (Predication and Control)**:–मनोविज्ञान का दूसरा लक्ष्य व्यवहार के पूर्वकथन एवं नियंत्रण करने में समर्थ होना है। मनोविज्ञान व्यवहार एवं प्रक्रियाओं के वर्णन एवं मापन के आधार पर पूर्वकथन करने का प्रयास करता है कि किसी विशेष स्थिति में प्राणी क्या कर सकता है। पूर्वकथन के साथ–साथ

FIRST STEP TO SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों के अनुकुल व्यवहार को निंयत्रित करने का प्रयास करते है।

3. **व्याख्या एवं स्पष्टीकरण (Interpretation and Explanation)**:–अंतिम लक्ष्य व्यवहार की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण प्रस्तुत करना है। व्यवहार एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की व्याख्या करने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करते है। सिद्धांतों के द्वारा कार्य–कारण संबंधों को भी स्पष्ट किया जाता है।

मनोविज्ञान के ये तीनों लक्ष्य एक दूसरे से संबंधित एवं एक–दूसरे पर पूर्णतः आश्रित है।

शिक्षा(Education)

शिक्षा का अर्थ :– व्यक्तित्व के चहुंमुखी विकास को शिक्षा कहते है। शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक सतत रूप से जारी रहती है।

संकीर्ण अर्थ :–''शिक्षा'' शब्द संस्कृत की '**शिक्ष्**' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है ''सीखना या सिखाना''।

प्राचीन युग में शिक्षा के लिए ''विद्या'' शब्द का प्रयोग भी किया जाता था। विद्या शब्द संस्कृत के ''विद्'' धातु से बना है, जिसका अर्थ है ''जानना''।

व्यापक अर्थ :–शिक्षा शब्द का अंग्रेजी रूपांतरण Education है। Education शब्द लैटिन भाषाा के निम्न चार शब्दों से बना है।

Education	प्रशिक्षित करना
E+duco	अंदर से बाहर निकालना
Educare	पालन पोषण करना
Educere	बाहर निकालना

SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

अतः Education का अर्थ :– आंतरिक शक्तियों को बाहर की ओर लाने को प्रेरित करना है।

शिक्षा की परिभाषाऐं :–

स्वामी विवेकानंद	''शिक्षा मनुष्य में अंतनिर्हित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''
गांधाजी	''शिक्षा का अर्थ में, बालक अथवा मनुष्य के शरीर, आत्मा, मन एवं बुद्धि के सर्वांगीण और सबसे अच्छे विकास से समझाता हूॅ।''

रविन्द्रनाथ टैगोर	''शिक्षक उस दीपक की तरह है जो खुद जलता रहता है और दूसरों को भी प्रज्जवलित करता रहता है।''
अरस्तु	''शिक्षा मनुष्य की शक्तियों का विकास करती है, विशेष रूप से मानसिक शक्तियों का विकास करती है ताकि वह परम सत्य, शिव एवं सुंदर का चिंतन करने के योग्य बन सकें।''
फ्राबेल	''शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी शक्तियों का विकास करता है।''
क्रो एवं क्रो	''शिक्षा व्यक्तिकरण एवं सामाजिकरण की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति तथा समाज की उपयोगिता को बढावा देती है।''
प्लेटो	''शिक्षा व्यक्तिकरण एवं सामाजिकरण की वह प्रक्रिया जो व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति तथा समाज की उपयोगिता को बढावा देती है।''
हर्बर्ट स्पैंसर	''पूर्ण जीवन की प्राप्ति ही शिक्षा है।''
पेस्टोलॉजी	''मानव की आंतरिक शक्तियों का स्वाभाविक व सामंजस्यपूर्ण प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है।''
रॉस	''शिक्षा बालक के स्वाभाविक तथा प्राकृतिक गुणों का विकास करती है।''

सामान्यतः उद्देश्य एवं परिस्थिति के आधार पर शिक्षा तीन प्रकार की होती है :–

1. **<u>औपचारिक शिक्षा(Formal Education)</u>**:–ऐसी शिक्षा जिसके निश्चित उद्देश्य हो और परिस्थिति भी निश्चित हो औपचारिक शिक्षा कहलाती है।
   जैसे – स्कूल की शिक्षा या कॉलेजों की नियमित शिक्षा।
2. **<u>अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education)</u>**:–ऐसी शिक्षा जिसके ना तो उद्देश्य निश्चित हो और ना ही परिस्थिति निश्चित हो अनौपचारिक शिक्षा कहलाती है।
   जैसे '–सडक पर चलते हुए प्राप्त शिक्षा।
   अनौपचारिक शिक्षा को **व्यवहारिक शिक्षा** भी कहते है। व्यवहारिक शिक्षा का पहला केन्द्र परिवार होता है।
3. **<u>निरौपचारिक शिक्षा (Non-formal Education)</u>**:–ऐसी शिक्षा जिसके निश्चित उद्देश्य हो, किंतु परिस्थिति निश्चित ना हो निरौपचारिक शिक्षा कहलाती है।
   जैसे – पत्राचार शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, खुला विश्वविद्यालय शिक्षा, प्रौढ शिक्षा, स्वयं पाठी विद्यार्थियों की शिक्षा आदि।

शिक्षा की प्रकृति –नियामक विज्ञान

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

नोट :–

- **मनोविज्ञान का बंजर काल :–** 1890 से 1905 तक चेतन व अचेतन के मध्य विरोधाभास चलता रहा ओर मनोविज्ञान के क्षेत्र में कोई विशेष उल्लेखनीय कार्य नही हुआ। अतः इस 15 वर्ष के काल को **मनोविज्ञान का बंजर काल** कहते है।
- मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहने का सबसे पहला प्रयास **विलियम मैक्डूगल** ने 1905 में अपनी पुस्तक **मनोविज्ञान की अवधारणा**(Outline of Psychology) में किया।
- मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान सबसे पहले **पिल्सवरी** ने सन 1911 में कहा, लेकिन स्पष्टीकरण नही दे पाया।
- मनोविज्ञान को व्यवहार का निश्चित एवं विशुद्ध विज्ञान **वाटसन ने** सन 1913 में कहा और स्पष्टीकरण भी दिया। इसलिए वाटसन को व्यवहारवाद सम्प्रदाय का जनक माना जाता है।
- 1870 तक मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र की एक शाखा थी। अमेरिकी विद्वान **विलियम जेम्स** ने मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र के शिकंजे से मुक्त करवाया और एक स्वंतत्र विषय का रूप दिया। इसलिए इसे **अमेरिकी मनोविज्ञान का जनक** माना जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान (Education Psychology)

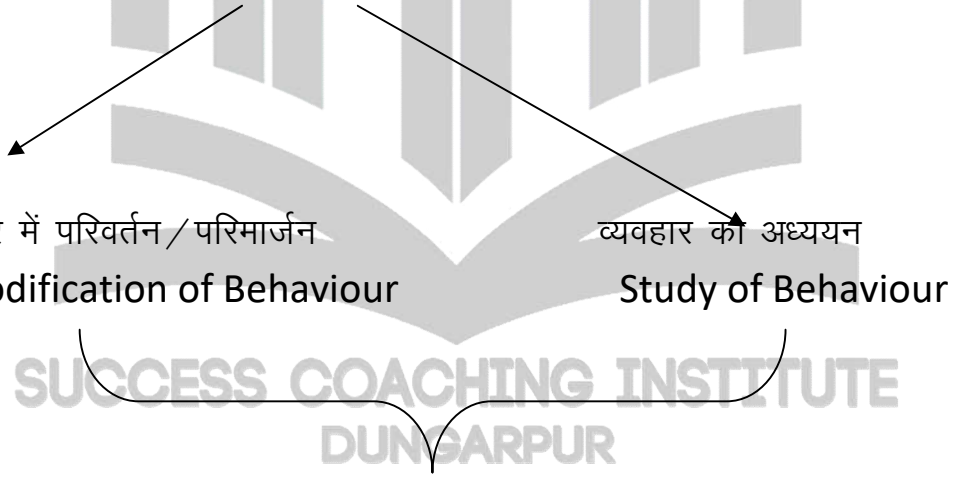

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु व्यवहार का अध्ययन करना ही शिक्षा मनोविज्ञान है।

- शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र **मानव व्यवहार** है।
- शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति मनोवैज्ञानिक है। क्योंकि शैक्षिक वातावरण में अधिगमकर्ता के व्यवहार का वैज्ञानिक विधियों के माध्यम से अध्ययन किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान को कला तथा विज्ञान दोनों की श्रेणी में रखा गया है।

शिक्षा मनोविज्ञान का इतिहास :–

- शिक्षा मनोविज्ञान की शुरूआत **अरस्तु के समय** से मानी जा सकती है परंतु शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पति युरोप में **पेस्टॉलोजी, हार्बट, फ्रॉबेल के** कार्यों से हुई।
- **डेमोकरिटस** पहले ऐसे दार्शनिक थे, जिन्होनें बच्चों के व्यक्तित्व–विकास में घरेलू शिक्षा के महत्व पर बल डाला था।
- **अरस्तु** मस्तिष्क के संकाय सिद्धांत में विश्वास रखकर शिक्षा में मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धांतों की उपयोगिता पर बल डाला था, बाद में डेकार्त तथा रूसों ने भी अरस्तु का समर्थन किया।
- रूसों ने शिक्षा को मानव विकास के नियमों पर आधारित करने की सिफारिश की, उन्होने अपनी लोकप्रिय पुस्तक ''**ईमाइल**'' **(EMILE) में** शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों एवं नियमों की भूमिका का स्पष्टीकरण किया।
- **जॉन लॉक ने** मस्तिष्क के संकाय की आलोचना की और बताया की यह संकाय वास्तविक नही है। इन्होने नये सिद्धांत को जन्म दिया –**शिक्षा का औपचारिक अनुशासन सिद्धांत।** इस सिद्धांत के अनुसार कुछ खास–खास कठिन विषयों जैसे गणित, लैटिन तथा ग्रीक सीखने से व्यक्ति का मस्तिष्क काफी प्रशिक्षित होता है। मस्तिष्क का धनात्मक हस्तांतरण शिक्षा के हर क्षैत्र में होता है।
- **जॉन डीवी** ने 1894 में शिकागों विश्वविद्यालय में **पहली वृहत शिक्षा मनोविज्ञान की प्रयोगशाला** स्थापित की।
- **थार्नडाइक** ने **1903** में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **शिक्षा मनोविज्ञान** का प्रतिपादन किया, जिसमें उन्होनें हस्तांतरण के एक नए सिद्धांत का प्रतिपादन किया जिसे **समरूप तत्वों का सिद्धांत** कहा गया जिसके अनुसार एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति पमें हस्तांतरण या मदद की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि इन दोनो परिस्थितियों में समान या समरूप तत्व कितने है।
- **थार्नडाइक** ने सीखने का सिद्धांत तथा सीखने के नियमों का प्रतिपादन किया।
- **थार्नडाइक ने** अंकगणित की शिक्षा देने के लिए सात प्रमुख नियमों का भी प्रतिपादन किया जो शिक्षा मनोविज्ञान के लिए आज भी एक अभूतपूर्व योगदान है।
- **थार्नडाइक** के महत्वपूर्ण योगदानों में शिक्षा मनोविज्ञान का वैज्ञानिक काल प्रारंभ होता है। इन्हें **प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक** कहा जाता है।
- **अमेरिका की नेशनल सोसायटी ऑफ कॉलेज टीचर्स आफॅ एजुकेशन (National Society of College Teachers of Education)** ने शिक्षा मनोविज्ञान के कार्यों को आगे बढाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
-

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

शिक्षा मनोविज्ञान परिभाषाऐं :–

क्रो एण्ड क्रो	''शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।''
स्किनर	'' शिक्षा मनोविज्ञान की वह शाखा जो **शिक्षण एवं अधिगम/सीखने** से संबंधित है।'' ''शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है।''
कॉल्सनिक	शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धांतों तथा खोजों को शिक्षा में प्रयोग है।''
पील	''शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है।''

FIRST STEP OF SUCCESS

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य :–

1. शिक्षकों की सहायता करना
2. उचित पाठ्यक्रम बनाना
3. उचित अध्यापन विधि प्रस्तुत करना
4. उचित शैक्षिक निर्देशन देना
5. उचित व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करना
6. शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना
7. अभिभावकों का मार्गदर्शन करना
8. मूल्यांकन की उचित विधियों को प्रस्तुत करना
9. समूह गतिकी को समझने में मदद करना

शिक्षा मनोविज्ञान की शिक्षक के लिए उपादेयता :–

SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

1. अपने आप को जानने में सहायता
2. शिक्षार्थी को जानने में सहायता
3. अधिगम प्रक्रिया को जानने में सहायता
4. शिक्षण कार्य में सहायता
5. असाधारण शिक्षार्थियों के अध्ययन में सहायता
6. व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अध्ययन में सहायता
7. सीखने संबंधी अनुभवों के अध्ययन में सहायता
8. शिक्षार्थियों के मार्गदर्शन में सहायता
9. मापन एवं मूल्यांकन में सहायता
10. व्यक्तित्व के अध्ययन में सहायता

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व :–

1. छात्रों का विकासात्मक विशेषताओं को समझने में – शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था
2. कक्षा के शिक्षण के स्वरूप को समझने में – Class Room Learning
3. शिक्षार्थियों की समस्याओं को समझने में –
4. शिक्षार्थियों के वैयक्तिक विभिन्नता को समझने में– शिक्षार्थियों की क्षमता (Ability), अभिक्षमता (Aptitude), मनोवृति(Attitude), शीलगुण(Traits)
5. शिक्षार्थियों में धनात्मक मनोवृति के विकास में
6. प्रभावी शिक्षण विधियों की पहचान में
7. पाठ्यक्रम के निर्माण में
8. समूह गतिकी को समझने में
9. अपवादात्मक बच्चों की शिक्षा के लिए मार्गदर्शन
10. शोधकार्यों में

शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षैत्र :–

1. वंशानुक्रम (Heredity)
2. विकास (Development)
3. व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual differences)
4. व्यक्तित्व (Personality)
5. अपवादात्मक बालक (Exceptional Child)
6. अधिगम प्रक्रिया (Learning Process)
7. पाठ्यक्रम निर्माण (Curriculum Development)
8. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)
9. शिक्षण विधियां (Teaching Methods)
10. निर्देशन एवं परामर्श (Guidance & Counselling)
11. मापन एवं मूल्यांकन (Measurement & Evaluation)

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियां

(Study Methods of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन और अनुसंधान के लिए सामान्य रूप से जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है, उनके दो भागों में बांटा गया है :–

(अ) आत्मनिष्ठ विधियां (Subjedtive Methods)	1. आत्मनिरीक्षण विधि	(Introspective Method)
	2. गाथा वर्णन विधि	(Anecdotal Method)
(ब) वस्तुनिष्ठ विधियां (Objedtive Methods)	1. प्रयोगात्मक विधि	(Experimental Method)
	2. निरीक्षण / बर्हिदर्शन विधि	(Observational Method)
	3. जीवन इतिहास विधि	(Case History Method)
	4. उपचारात्मक विधि	(Clinical Method)
	5. विकासात्मक विधि	(Development Method)
	6. मनोविश्लेषण विधि	(Psycho-analytic Method)
	7. तुलनात्मक विधि	(Comparative Method)
	8. सांख्यिकी विधि	(Statistical Method)
	9. परीक्षण विधि	(Test Method)
	10. साक्षात्कार विधि	(Interview Method)
	11. प्रश्नावली विधि	(Questonnaire Method)
	12. विभेदात्मक विधि	(Differential Method)
	13. मनोभौतिकी विधि (मन तथा शरीर पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन)	(Psycho-Physical Method)

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

1. <u>अंतदर्शन विधि (**Introspection Method**)</u> :– यह प्राचीन विधि है, इसका प्रतिपादन संरचनावाद सम्प्रदाय के जनक विलियम वुण्ट तथा उनके शिष्य टिचनर ने किया।

   इसके अनुसार चेतन अनुभूति के अंतदर्शन के तीन तत्व – संवेदना(Sensation), भाव(Feeling) तथा प्रतिमा(Image) सम्मिलित रहते है।

   अंतदर्शन का तात्पर्य अपने अंदर देखना अथवा अंतर्निरीक्षण से है। प्रारंभ में मनोवैज्ञानिक मानसिक क्रियाओं तथा प्रतिक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस विधि का प्रयोग करते थे। वह अपने अनुभवों के समय अर्थात सुख–दुख, क्रोध–शांति, घृणा–प्रेम आदि स्थितियों में अपनी मानसिक दशाओं तथा भावनाओं का अंतर्निरीक्षण करके उसका वर्णन करते थें।

   उदहारणार्थ : यदि कोई व्यक्ति क्रोध में है तथा वह अपने क्रोध की अनुभूति के कारणों को स्वयं ज्ञात करें तथा इसके आधार पर क्रोध से संबंधित मानसिक क्रियाओं के अन्यत्र सिद्धांत अथवा दशाओं का निरीक्षण करे तो इसे अंतःदर्शन कहा जायेगा। अंतदर्शन करने वाला व्यक्ति किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह(Prejudice),पक्षपात (Bias) एवं अवरोधात्क की भावना से ग्रस्त न हो।

   <u>अंतदर्शन विधि (**Introspection Method**) की सीमाऐं :–</u>

   1. इस विधि में व्यक्ति स्वयं के व्यवहार का अध्ययन करता है।
   2. इससे प्राप्त होने वाली विभिन्न सूचनाऐं अत्यधिक विषयनिष्ठ(Subjective) प्रकृति की होती है।
   3. शिशुओं, बालकों, असामान्य व्यक्तियों तथा पशु–पक्षियों के द्वारा अंतर्दशन विधि का प्रयोग संभव नही हो सकता है।
   4. अचेतनावस्था (Unconciousness) में किए जाने वाले व्यवहार का अध्ययन इस विधि के द्वारा नही हो सकता है।

2.<u>**गाथा वर्णन**</u> :–इस विधि में व्यक्ति अपने किसी पूर्व अनुभव या व्यवहार का वर्णन करता है। मनोवैज्ञानिक उसे सुनकर एक लेखा तैयार करता है। उसके आधार पर निष्कर्ष निकालता है।

दोष :– व्यक्ति अपने पूर्व अनुभव का ठीक–ठाक पुनः स्मरण नही कर पाता है।

स्किनर –''गाथा वर्णन विधि की आत्मनिष्ठता के कारण इसके परिणाम पर विश्वास नही किया जा सकता है।''

<u>**3. बहिर्दर्शन विधि (Extrospection Method)**:–</u> इस विधि का प्रतिपादन व्यवहारवाद सम्प्रदाय के जनक **जे.बी.वाटसन** के द्वारा किया गया था। उन्होने मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में परिभाषित करते हुए कहा कि इसका अध्ययन **निरीक्षण विधि** से ही किया जा सकता है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

जैसे :– व्यक्ति की लाल आंखे, हाथों की बाहों को ऊपर की ओर करते हुए, जोर–जोर से बोलता है तो उसके व्यवहार को देखकर हम समझ जाते है कि वेा क्रोधित है।

बहिर्दर्शन को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए निरीक्षण अनुसूची(Observation Schedule) का प्रयोग किया जाता है।

बहिर्दर्शन विधि की विशेषताऐं :–

1. शिशुओं, बालकों, किशोरों, प्रौढों, समूहों आदि सभी के लिए उपयोगी
2. अचेतन, अर्द्धचेतन, विकृत एवं विक्षिप्त अवस्थाओं के लिए उपयेागी
3. एक साथ अनेक व्यक्तियों के व्यवहार का अवलोकन, जिससे परिणाम अधिक वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध प्राप्त होते है।
4. इस विधि से प्राप्त परिणामों के संख्यात्मक होने के कारण उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सकता है।

बहिर्दर्शन विधि की सीमाऐं :–

1. अवलोकनकर्ता अन्य व्यक्तियों के व्यवहार का अवलोकन करते समय पूर्वाग्रहों तथा पूर्वधारणाओं से ग्रसित रहता है।
2. अवलोकित व्यक्ति कभी–कभी जानबुझकर अस्वाभाविक/कृत्रिम व्यवहार करता है।
3. व्यवहार का अवलोकन करना कठिन कार्य है।
4. गोपनीय प्रकृति के व्यवहार का अवलोकन संभव नही है। जैसे :– Sex Behaviour

4. प्रयोगात्मक विधि (Experiment Method):– क्रो एण्ड क्रो के अनुसार ''मनोवैज्ञानिक प्रयोगों का उद्देश्य किसी निश्चित परिस्थिति या दशाओं में मानव व्यवहार से संबंधित किसी विश्वास या विचार का परीक्षण करना है।''

कार्य–कारण संबंध को स्थापित करने के लिए प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रयोगात्मक विधि में परिस्थितियों को नियंत्रित करके व्यवहार का अवलोकन किया जाता है। इसलिए प्रयोगात्मक विधि को नियंत्रित अवलोकन विधि भी कहा जाता है।

प्रयोगात्मक विधि के चरण :–

1. समस्या
2. संबंधित साहित्य का अध्ययन और उपकल्पना निर्माण
3. प्रयोज्य(Subject) का चयन
4. चर और प्रयोगात्मक अभिकल्प (Variables and Design of the experiment) जैसे – प्रकाश, ध्वनि, तापक्रम आदि सभी किसी न किसी प्रकार के चर है।

5. उपकरण तथा सामग्री
6. नियंत्रण– कारक/चर पर
7. निर्देश तथा विधि
8. परिणाम
9. व्याख्या तथा सामान्यीकरण

प्रयोगात्मक विधि की विशेषताऐं :–

1. प्रयोगात्मक विधि एक वैज्ञानिक विधि है। इससे प्राप्त निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ, विश्वसनीय तथा वैध होते है।
2. इस विधि में परिस्थितियों पर मनोवैज्ञानिक का नियंत्रण रहता है इसलिए इस विधि से कार्य–कारण संबंध स्थापित किए जा सकते है।
3. इस विधि से प्राप्त परिणामों का सत्यापन प्रयोग की पुनरावृति करके किया जा सकता है।
4. पशुओं पर प्रयोग करके प्राप्त परिणामों का मनुष्यों के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।
5. उच्चस्तरीय प्रयोगात्मक अभिकल्पों का प्रयोग करके इस विधि के द्वारा मनोवैज्ञानिक समस्या का अध्ययन विशुद्ध ढंग से किया जा सकता है।

प्रयोगात्मक विधि की सीमाऐं :–

1. भौतिक परिस्थितियों पर नियंत्रण रखा जा सकता है लेकिन किसी के व्यवहार से संबंधित परिस्थितियों पर पूर्ण नियंत्रण रखना अत्यंत कठिन अथवा असंभव होता है।
2. प्रयोग चाहे कितनी ही सावधानी से क्यों न किया जाए उसमें कुछ न कुछ कृत्रिमता आ ही जाती है। जिसके कारण परिणामें की विश्वसनीयता संदिग्ध हो जाती है।
3. बालकों में क्रोध, भय, डर आदि उत्पन्न करने के लिए परिस्थितियों का निर्माण करना अवांछनीय ही होगा।
4. व्यक्ति को केवल बाह्य कारक ही प्रभावित करते है। लेकिन आंतरिक कारक पर निंयत्रण संभव नही होता है।
5. पशुओं पर किए गए प्रयोगों से प्राप्त परिणाम सदैव मनुष्य के लिए उपर्युक्त नही होते है।

5. जीवन इतिहास विधि :–प्रवर्तक – टाइडमैन

- इस विधि में जीवन इतिहास द्वारा मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
- विशिष्ट व्यवहार – मानसिक रोगी, समस्यात्मक बालक के विशेष व्यवहार
- किसी कारण का निदान/उपचार करने हेतु।
-

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR

जीवन इतिहास विधि विशेषताऐं :–

1. उपचारात्मक परामर्श व निर्देशन की दृष्टि से यह विधि सर्वोतम है।
2. मंद बुद्धि व पिछडे बालकों तथा मानसिक रोगों से ग्रस्त बालकों के अध्ययन के लिए यह विधि उपयोगी है।
3. इस विधि में विभिन्न स्त्रोतों से तथा व्यापक ढंग से सूचनाऐं संकलित की जाती है। इसलिए इस विधि से प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय होते है।

जीवन इतिहास विधि सीमाऐं :–

1. इस विधि का प्रयोग विशेषज्ञ ही कर सकते है।
2. इस विधि में समय,श्रम व धन अधिक लगता है जिसके कारण यह विधि अधिक व्ययशील हो जाती है।
3. कभी–कभी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सूचनाओं को छिपाने का प्रयास करते है, जिससे इसके निष्कर्ष गलत हो सकते है।
4. इस विधि से प्राप्त सूचनाओं की व्याख्या करते समय मनोवैज्ञानिकगणों में प्रायः कुछ न कुछ मतभेद रहता है।

6. **मनोविश्लेषण विधि** :– प्रवर्तक :– फ्रायड
    - इस विधि में व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन किया जाता है।
    - इस विधि में व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन करके उसकी असंतृप्त इच्छाओं की जानकारी प्राप्त की जाती है।
    - इस विधि का मुख्य उद्देश्य **व्यक्ति के अचेतन मन** का अध्ययन करके उपचार करना है।

मनोविश्लेषण विधि विशेषताऐं :–

1. इस विधि से व्यक्ति के अचेतन तथा चेतन मन दोनों ही का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. व्यक्ति की भावना ग्रंथियों को ज्ञान प्राप्त करना तथा मानसिक विकारों का उपचार करना इस विधि के प्रयोग से ही संभव है।
3. इस विधि में व्यक्ति अपने मन की बातों को छूपा नही पाता है।

मनोविश्लेषण विधि की सीमाऐं :–

1. इस विधि का प्रयोग केवल दक्ष मनोविश्लेषक ही कर सकते है।
2. इस विधि के प्रयोग में धन व समय अधिक लगता है।
3. इस विधि में व्यक्ति तथा मनोविश्लेषक दोनो ही अत्यधिक धैर्य से कार्य करना चाहते है। जो कभी कभी असंभव हो जाता है।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
BANSWARA

4. व्यक्ति के मन में छिपी अनेक इच्छाओं के सार्वजनिक हो जाने के कारण व्यक्ति तथा समाज इस विधि के प्रयोग करने में सहयोग नही देते है।

7. **प्रश्नावली विधि** :– प्रवर्तक : वुडवर्थ (प्रश्नोत्तर विधि –सुकरात)
   अन्य नाम : कागज पेंसिल परीक्षण

   - इस विधि में प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करके समस्या संबंधी तथ्य एकत्रित करते है।
   - प्रश्नावली विधि दो प्रकार की होती है – 1. खुली प्रश्नावली विधि

3. बंद प्रश्नावली विधि

प्रश्नावली के प्रकार :–

1. **तथ्य सम्बन्धी प्रश्नावली** :– इस प्रश्नावली का प्रयोग किसी समूह की सामाजिक आर्थिक दशाओं से सम्बन्धित तथ्यों को संग्रह करने के लिए किया जाता है। जब हम किसी व्यक्ति की आयु, धर्म, जाति, शिक्षा, विवाह, व्यवसाय, पारिवारिक रचना आदि के बारे में सूचनाएं एकत्र करना चाहते हैं तो इसकी रचना की जाती है
   उदाहरण
   (क) शिक्षा की स्थिति – साक्षर/निरक्षर (ख) व्यवसाय की स्थिति – प्राइवेट/सरकारी
2. **मत एवं मनोवृत्ति सम्बन्धी प्रश्नावली** :– जब किसी विषय पर सूचनादाता की रूचि , राय, मत, विचारधारा, विश्वास एवं दृष्टिकोण जानना चाहते हैं तब इस प्रकार की प्रश्नावली का प्रयोग होता है। बाजार, सर्वेक्षण, जनमतसंग्रह, विज्ञापन तथा टेलीविजन एवं रेडियो कार्यक्रम के बारे में लोगों के विचार जानने के लिए इस प्रकार की प्रश्नावली का निर्माण होता है ।
   उदाहरण (क) आप कौन सा अखबार पसन्द करते है। (ख) क्या आप सती प्रथा के पक्ष में है।
3. **संरचित प्रश्नावली** :– इस प्रकार की प्रश्नावली का निर्माण अनुसन्धान प्रारम्भ करने से पूर्व विषय पर लोगों की राय, सामाजिक स्वास्थय जन कल्याण की योजनाऐं लोगों के रहन सहन की दशा, आय–व्यय आदि के बारे में सूचना एकत्र करने के लिए भी संरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया जाता है तथा अनुसन्धानकर्ता को उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की छूट नहीं होती है।
4. **असंरचित प्रश्नावली**:– असंरचित प्रश्नावली में पहले से प्रश्नों का निर्माण नही किया जाता वरन् केवल उन विषयों एवं प्रसंगों का उल्लेख किया जाता है। जिनके बारे में सूचनाएं संकलित करनी होती है। यह पथ प्रदर्शिका की तरह कार्य करती है। असंरचित प्रश्नावली में उत्तरदाता खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है।
5. **बन्द, सीमित या प्रतिबन्धित प्रश्नावली** :– इस प्रकार की प्रश्नावली में प्रश्नों के सामने कुछ निश्चित वैकल्पिक उत्तर लिखे होते है। और उत्तरदाता को उनमें से ही उत्तर छाँटकर लिखने होते है। इस प्रकार की प्रश्नावली में उत्तर देने में सूचनादाता

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE DUNGARPUR

को सुविधा रहती है। **उदाहरण** (क) आप राजनीति में जाति के हस्तक्षेप को मानते है–(उचित, उचित नहीं, क्षेत्र विशेष में जनसंख्या के आधार पर उचित)
(ख) जातिगत आरक्षण उचित है दृ यहाँ ध्नहींद्ध

6. **खुली/असीमित या अप्रतिबन्धित प्रश्नावली :–** इस प्रकार की प्रश्नावली में सूचनादाता को अपने विचारों को खुलकर प्रकट करने की स्वतन्त्रता होती है। अप्रतिबंधित प्रश्नावलियों का प्रयोग व्यक्गित विचारोंए भावनाओं, सुझावों एवं विषय से संबंधित प्रारम्भिक सूचनाओं को संकलित करने के लिए भी किया जाता है । उदाहरण (क) महिलाओं का सशक्तिकरण कैसे हो सकता है?
(ख) पंचायती राज में महिलाओं की भागेदारी कैसे बढ़ेगी?
7. **चित्रमय प्रश्नावलीः–** इस प्रकार की प्रश्नावली में प्रश्नों के सम्भावित उत्तर चित्र द्वारा प्रकट किये जाते है और सूचनादाता अपने उत्तर का चयन उन चित्रों में से ही करके उस पर निशान लगा देता है। **उदाहरण** यह जानने के लिए कि आप गॉव और नगर में से कहॉ रहना पसंद करेंगे? इसके उत्तर को जानने के लिए गॉव एवं नगर के चित्र बना दिये जाते हैं।
8. **मिश्रित प्रश्नावली**:– इस प्रकार की प्रश्नावली उपर वर्णित सभी प्रकार की प्रश्नावलियों की विशेषताएं लिए होती है। इसमें बन्द व खुली प्रश्नावली का मिश्रण होता है। ऐसी प्रश्नावलियॉ कम और अधिक शिक्षित दोनो के लिए ही उपयोगी होती है । इनके द्वारा स्पष्ट तथा सटीक उत्तर के साथ ही उत्तरदाता के स्वतंत्र विचार जानना भी संभव होता है ।

8. उपचारात्मक विधि (Clinical Method):–इस विधि का मुख्य उद्देश्य **आचरण संबंधी जटिलताओं** का अध्ययन कर उन्हें दूर करने में सहायता करना है।

यह विधि पढने में कठिनाई अनुभव करने वाले बालक, हकलाने वाले बालक,अपराधी प्रवृति वाले बालक, गंभीर संवेगों वाले बालक के लिए विशेष उपयोगी है।

9. **नैदानिक विधि (Diagnostic Method):–** नैदानिक विधि का प्रयोग **व्यक्ति के व्यवहार की जटिलताओं का अध्ययन** करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्तिगत विधि है तथा इस विधि में व्यक्ति का अध्ययन करके उसके सम्मुख आने वाली की विलक्षणता तथा समस्याओं को जानना होता है, तब मनोवैज्ञानिक प्रायः जीवन–इतिहास विधि का प्रयोग करते है। इस के अंतर्गत अपराधी, मानसिक रोगी, झगडालू, प्रतिभाशाली, समाज विरोधी कार्य करने वाले समस्यात्मक बालक आदि कुछ भी हो सकते है।
10. **समाजमिति विधि** :– प्रवर्तक – **जे.एल. मरेनों**
    - सामाजिक संबंध बनाने में उपयोगी है।
    - छात्रों में अंतःक्रिया करवाने की उत्तम विधि है।
    - अनेक समूहों की आपस में तुलना संभव है।
11. **विकासात्मक विधि :–** इस विधि को जैनेटिक विधि भी कहा जाता है।

- यह विधि मानव की **वृद्धि और विकास** क्रम का अध्ययन करती है। मनोवैज्ञानिक जन्म से लेकर प्रौढावस्था तक व्यक्ति के विकास के विभिन्न पक्षों से संबंधित सूचनाऐं एकत्रित करता है तथा उसका विश्लेषण करके व्यक्ति के विकास पर उसके वंशानुक्रम तथा वातावरण के प्रभाव को देखता है।
- यह विधि दीर्घकालीन विधि है, जिसमें अनेक वर्षों तक संमकों को एकत्रित करना होता है।

12. **तुलनात्मक विधि :–** इस विधि में प्राणियों के व्यवहार से संबंधित समानताओं तथा असमानताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। जैसे –पशु तथा मानवों के व्यवहारों की तुलना, विभिन्न वातावरण में पाले गए बालकों की तुलना, दो प्रजातियों के व्यवहारों की तुलना, लडके तथा लडकों के व्यवहारो की तुलना।

FIRST STEP OF SUCCESS
SUCCESS COACHING INSTITUTE
DUNGARPUR